ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBBIL04292
RNI REG. NO. UPBBIL/2014/66218 PP. NO.- 398-401

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-11, No.-II, Issues-14 YEAR- Dec. -2019

युद्ध, आतंकवाद और मीडिया

डॉ0 सानन्द कुमार सिंह
एसो0 प्रो0– राजनीति विज्ञान विभाग, सतीश चन्द्र कॉलेज बलिया (उ0प्र0), भारत

Received- 07.12.2019, Revised- 11.12.2019, Accepted - 14.12.2019 E-mail: -sanandksingh@gmail.com

सारांश : *उम्मीद थी कि बीसवी सदी के दो विश्व युद्धों की महा विभिषिका के इतिहास में दर्ज होने के साथ–साथ विष्व मानवता–शान्त एवं सृजनात्मक युग में प्रवेश करेगी। लेकिन 20 वी सदी के अन्तिम चरण और नई सदी के शैशव काल का घटनाचक्र नई त्रासदियों की दिशा में घुमता दिखाई दे रहा है। आतंकवाद की शक्ल में दृश्य–अदृश्य छायायुद्धों (प्राक्सीवार) का अन्तहीन सिलसिला चल पड़ा है। वेशुमार वदहालियों से जुझते पिछड़े एवं विकासशील देशों के अलावा समृद्ध देश भी आतंकवाद की मजबूत व गहरी गिरत में हैं। विश्व महाशक्ति अमेरिका भी इसका अपवाद नहीं रहा। भारत तथा दक्षिण एशियाई देश तो इसमें लगातार झुलस रहे है। यह आतंकवाद एक अन्तर्राष्ट्रीय उद्योग बन गया है, और पूर्व वित्तीय सहयोग प्राप्त उद्योग। जिसके कर्मचारियों को घूस के अतिरिक्त बड़ी मात्रा में वेतन मिलना है। इस कार्यवाही में विश्व के देश समान रूप से रूचि ले रहे है। आतंकवादी संगठनों ने पिछले कुछ वर्षों से अत्यधिक संवेदनशील हथियारों और सुरक्षित, विश्वसनीय और तीव्रगति के आधुनिकतम संचार–साधनों का प्रयोग किया है। वे आतंकवाद–समर्थक चरमपंथियों से भी समर्थन ले रहे है। उनके पास विश्वसनीय इटेलीजेन्स तथा संचार साधनों के अलावा भारी मात्रा में धन उपलब्ध है।*

कुंजीभूत शब्द– लोकमंगल, आराध्य, चरित्र, लोक मंगल आराधना, सनातन मूल्य, लोकप्रिय सद्ग्रन्थ।

एक सामान्य प्राणी होने के नाते मानव स्वभाव से ही समाचारों को जानने का भूखा रहा है। मान्यता, अभिज्ञता और साहसिक वृत्तियों की जानकारी से प्रोत्साहन मिलता है, यही जानकारी समाचार है। मानव की जिज्ञासा का परिणाम आज का विश्व हर समय कुछ पाने, कुछ जानने को तैयार रहने वाली यह जाति आज ब्रह्मण्ड को अपने कैमरे में बन्द करके भी सन्तुश्ट नहीं है। यह हर वक्त कुछ जानना चाहती है। पौराणिक कथाओं में पत्राचार का कार्य श्री नारद मुनि मौखिक रूप से करते थे, परन्तु महाभारत काल में यह कार्य संजय ने किया, जिन्होंने महाभारत युद्ध की सम्पूर्ण घटना महाराजा घृतराष्ट्र को सुनाया। आज प्रिन्ट मीडिया और इलेक्ट्रानिक मीडिया ने इण्टरनेट की सहायता से विश्व को काफी संकुचित कर उसे वैश्विक गाँव बना दिया है।

भारत के स्वतंत्रता संग्राम में अपनी बातों को जन–जन तक पहुंचाने हेतु अनेक समाचार पत्र एवं पत्रिकाओं का सृजन किया गया। इन समाचार पत्रों एंव पत्रिकाओं ने सकारात्मक भूमिका का निर्वहन करते हुए प्रत्येक व्यक्ति तक राष्ट्रहित की बातों को पहुंचाया तथा स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात राष्ट्र निर्माण की गति को बनाए रखनें के लिए चार स्तम्भ निर्धारित किये– 1–विधायिका, 2– कार्यपालिका, 3– न्यायपालिका, 4– मीडिया। लोकतंत्र की सफलता के लिए इन चारों स्तम्भों का परस्पर गहरा सम्बन्ध है। मीडिया को समाज का दर्पण माना जाता है। इसका उद्देश्य समाजहित एवं राष्ट्रहित था।

पिछले कई दशको से अमेरिका के विषय में एक मिथक प्रसिद्ध था कि उस पर कोई आक्रमण नहीं कर सकता। प्रथम विश्व युद्ध, द्वितीय विश्वयुद्ध, कोरिया युद्ध, वियतनाम युद्ध, खाड़ी युद्ध, अमेरिका ने अपनी धरती से बाहर जाकर लड़े। वियतनाम युद्ध में यद्यपि उसे पराजय का मुख देखना पड़ा, किन्तु यह युद्ध अपनी धरती से दूर जाकर लड़ा गया। इसलिए अमेरिकीवासियों को भी वास्तविक युद्ध की विभिषिका का एहसास नहीं हुआ था। वियतनाम युद्ध के पश्चात् अमेरिका अपनी खोई प्रतिष्ठा को पुनः प्रतिस्थापित करने का अवसर सद्दाम हुसैन ने कुवैत पर 2 अगस्त, 1990 को आक्रमण कर उपलब्ध करा दिया। इराकी राष्ट्रपति सद्दाम हुसैन ने अपने चचेरे भाई अली हसन अल माजिद (केमिकल अली) को कुवैत का गर्वनर बनाते हुए कुवैत को इराक का 19वां प्रान्त घोषित कर दिया। संयुक्त राज्य अमेरिका ने 34 देशों की संयुक्त राष्ट्र के निर्देशन में बहुराष्ट्रीय सेना का गठन कर इराक को कुवैत से बाहर निकालने के लिए ''आपरेशन डेजर्ट स्आर्म'' व ''आपरेशन डेजर्ट शील्ड'' अभियान प्रारम्भ कर दिया। अमेरिकी सरकार ने अपने फायदे के लिए दुनिया भर के मीडिया का इस्तेमाल किया परन्तु अमेरिकी सरकार ने इलेक्ट्रानिक मीडिया पर पूरा अंकुष रखा। उसने सबसे पहले इराकी टी0वी0 चैनलों एवं बगदाद स्थित अल जजीरा के कार्यालय पर बमबारी कर अपने अनुसार टी0वी0 एवं रेडियों का प्रसारण शुरू किया। खाड़ी युद्ध एक ऐसा युद्ध था जिसको टेलीवीजिन पर दुनिया भर के देशों ने शत्रु लक्ष्यों पर मिसाइलों के हमलों को लाइब देखा। संयुक्त राज्य अमेरिका में 'बिग थ्री' नेटवर्क एंकर्स ने युद्ध के समाचारों को कवर

ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBBIL04292
RNI REG. NO. UPBBIL/2014/66218

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-11, No.-II, Issues-14 YEAR- Dec. -2019

किया। ABC के पीटर जेनिग्स, CBS के डेनराथर और NBC के टाम ब्रोकाव उस समय हवाई हमलों का समाचार प्रसारित कर रहे थे। 16 जनवरी 1991 को हवाई हमले शुरू हुए जिसमें CNN ने अपने कबरेज में सबसे ज्यादा लोकप्रियता हासिल की। दुनिया भर के समाचार पत्रों ने युद्ध को कबर किया। टाइम पत्रिका ने 28 जनवरी 1991 को एक विशेष अंक जारी कर "वार इन द गल्फ" नामक कवर पेज पर हेडलाइन में बगदाद की तस्वीर प्रस्तुत की गयी। यह पूर्ण रूप से अमेरिकी सरकार द्वारा प्रायोजित एवं नियंत्रित थी। 11 सितम्बर 2001 की सुबह दुनिया की एक मात्र महाशक्ति अमेरिका के लिए काली सुबह साबित हुई। उस समय कई मिथक ताश के पत्तों की भाँति ढ़ह गये। 11 सितम्बर 2001 को अलकायदा संगठन के आतंकवादियों ने आतंकवाद के इतिहास की अब तक की सर्वाधिक वर्वर कार्रवाई में न्युयार्क स्थित वर्ल्ड ट्रेड सेन्टर के दोनों टावरों को विमान टकराकर ध्वस्त कर दिया तथा अमेरिकी सेना के मुख्यालय पेंटागन से भी एक विमान टकराकर उसके भवन को क्षति पहुँचाया। इन आतंकवादी घटनाओं के लिए वोस्टन से लास एंजिल्स जा रहे चार विमानों का अपहरण आतंकवादियों द्वारा किया गया। जिसमें से एक विमान पेन्सिलवानिया के जंगलों में गिर गया। इस कारवाई में लगभग 600 सवार लोगों की मृत्यु हो गयी, और लगभग 5000 से अधिक लोग मारे गये या घायल हुए। अमेरिकी राश्ट्रपति जार्ज बुष ने आतंकवादी को 'अमेरिका के खिलाफ युद्ध' की संज्ञा देते हुए आतंकवादियों को पकड़ने का आदेश दिया।

वर्ल्ड ट्रेड सेन्टर और पेंटागन पर हुए आतंकवादी हमलों के बाद से अमेरिकी मीडिया खबरों का मुख्य केन्द्र बन गया। भारतीय समाचार चैनलो की खबरों और रिपोर्टो का मुख्य स्त्रोत अमेरिकी मीडिया था। सी0एन0एन0 पहला ऐसा चैनल था, जिसने 11 सितम्बर 2001 की घटना को अमेरिकी रणनीति और एजेंडे के अनुरूप प्रचारित किया। अमेरिका टीवी चैनलों या मीडिया से सरकारी नीतियों और रणनीति के खिलाफ कवरेज या प्रचार की उम्मीद तो नहीं की जा सकती, लेकिन उनसे काफी हद तक निष्पक्षता की अपेक्षा थी। लेकिन वह इस अपेक्षा पर खरा नहीं उतरा। ऐसे में भारतीय मीडिया का पूरी तरह से अमेरिकी मीडिया पर निर्भर रहना कहा तक सही है।

दुनिया की अकेली महशक्ति माने जाने वाले देश पर आतंकवादी हमला कोई मामूली वात नहीं थी, लेकिन इस पूरे घटनाक्रम की सूचना दुनिया भर में फैलाने और पल–पल बनते–बिगड़ते हालात से लोगों को खबरदार करने में अमेरिकी और भारतीय मीडिया ने क्या रूख अपनाया यह विचारणीय है। अमेरिका पर हमला और अफगानिस्तान पर जबावी कार्रवाई के बीच के अन्तराल में अमेरिकी मीडिया ने सरकारी कदमों के समर्थन में हर तरह से प्रचार किया। पूरी दुनिया में अमेरिकी कारवाई के मुताबिक जनमत बनाने में अहम भूमिका निभाई।

मिडिया कवरेज पर शुरू से नजर डाले, तो अमेरिका ने जवाबी कार्रवाई को आतंकवाद के खिलाफ जंग बताते हुए पूरी दुनिया के देशों को अपने खेमे में शामिल होने का आदेश दिया। बहुत से देशों को इस जंग में शामिल करने में वह–कामयाब भी रहा। इसीलिए जब 7 अक्टूबर 2001 को अफगानिस्तान पर अमेरिकी हमलों की खबर मिली तो इस पर किसी को भी अचम्भा नहीं हुआ। अमेरिका ने आखिरकार जवाबी कारवाई की। 'अमेरिका का बदला' और 'अमेरिका का इंसाफ' जैसे शीर्षको के साथ सभी टी0वी0 चैनलो व अखबारों ने घटना की रिपोर्ट पेश की। युद्ध को किसी भी सन्दर्भ में नैतिक नहीं ठहराया जा सकता, परन्तु अमेरिका तथा उसके सहयोगी देशों की जुबानी हमले उनके तर्क और वितर्क के साथ पूरे 26 दिन जारी रहे। इसका नतीजा यह हुआ कि पूरी दुनिया में यह माहौल बनाने के रूप में सामने आया कि अफगानिस्तान पर हमला आतंकवाद के खिलाफ विश्वव्यापी लड़ाई की शुरूआत है। सी0एन0एन0 ही न्यूज चैनल था जिसने अमेरिका पर आतंकवादी हमले की खबर सबसे पहले दी। पहले 'अटैक आन अमेरिका' और बाद में 'स्ट्राइक अगेंस्ट टेरर' टाइटल के साथ शब्द शैली बदलते हुए सी0एन0एन0 ने वर्ल्ड ट्रेड टावर के धाराशाही होने की तस्वीरों से लेकर अफगानिस्तान पर अमेरिकी हमलों तक की हर फुटेज दिखाई। मिडिया कवरेज ने लोगों को यह मानने के लिए मनोवैज्ञानिक रूप से तैयार कर दिया, कि मौजूदा समय में सिर्फ एक अहम् मुद्दा है। एक ही लक्ष्य है, एक ही दृष्टिकोण हैं। अमेरिका को आतंकवाद के विरूद्ध लड़ाई की शुरूआत करनी है। दूसरे देशों के नेताओं के बयान भी अमेरिकी मीडिया के खास हिस्सा बने है। राष्ट्रपति बुश हर समय एक नयी जानकारी और बयान के साथ किसी न किसी विदेशी चैनल पर मौजूद दिखे।

एक ही तरह के बयानों के दोहराव और आतंकवाद के खिलाफ 40 देशों के साथ विश्व गठबन्धन बनानें में समाचार चैनलों ने अमेरिकी पक्ष के मुताबिक भूमिका निभाई। शीतयुद्ध के दौरान भी अमेरिका और सोवियत संघ ने मीडिया का जमकर इस्तेमाल किया था। वियतनाम में अमेरिका की सैनिक कार्रवाई, खाड़ी युद्ध और अब अफगानिस्तान पर हमला हर वार यही साबित हुआ कि अमेरिकी मीडिया वहाँ की सरकार की नीतियों और एजेंडें के प्रचार–प्रसार के लिए पूरी तरह से तैयार रहा है।

अफगानिस्तान युद्ध अमेरिका के नेतृत्व में चल रहा है, असल में वियतनाम युद्ध के दौरान अमेरिकी फौजियों की

PIF/4.005 *ASVS Reg. No. AZM 561/2013-14*

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-11, No.-II, Issues-14 YEAR- Dec. -2019

जिस बड़ी संख्या में मौत हुई और लाशों के ढ़ेर लग गये विश्व जनमत का बहुत बड़ा हिस्सा तो पहले ही खिलाफ था। अमेरिका की इस युद्ध में अपनी कम क्षति के साथ युद्ध जीतना आवश्यक था, अतः इस अफगान युद्ध से उसका वैश्विक दबदबा बढ़ा। इस युद्ध में तीन महीने से ज्यादा अमेरिकी तथा ब्रितानी बमबारी चलती रही। कारपेट बाम्बिंग और क्लस्टर बाम्बिंग का इस्तेमाल हुआ। इस युद्ध में निर्दोश लोगों के मौतों को कम दिखाया गया, अर्थात् ऐसे लोगों की मौत लाखों में हुई। इन खबरों को दबाने–छिपाने की अमेरिकी रणनीति निश्चित ही कारगर सिद्ध हुई। इस रणनीति का नाम है ''आपरेशन कान्सेप्ट फार डिसेवलिंग मेजर्स''। इसका उद्देश्य युद्ध क्षेत्र में फंसी आबादी की बड़ी संख्या में मौत को न्यूनतम जानकारी होने देना था। इसी कार्य नीति के जरिये अफगान युद्ध में निर्दोषों की मौत की घटनाओं को मीडिया में आने से भरसक रोका गया। 11 सितम्बर 2001 के बाद मीडिया पूरी तरह से अमेरिकी सरकार का गुलाम बन गया है। मीडिया षायद ही कभी अपनी नियन्त्रण रेखा पार करता है। अमेरिकी सत्ता प्रतिष्ठान तेल हितो और बहुराष्ट्रीय हितों ने तथा कथित स्वत्रंत मीडिया नेटवर्कों को इस प्रकार समन्वित कर दिया है, कि वे एक ही सिक्के के दो पहलू बन गये है। अन्य देशों में भी शक्तिशाली सत्ता प्रतिष्ठानों द्वारा बार–बार प्रचार अभियान चलाये जाते है ताकि जनता को उनके लिए निर्धारित कार्यक्रम के अनुकूल चलने के लिए प्रेरित किया जा सके। जार्ज बुश ने जनता को अवगत कराया था कि इस आतंकी हमले के पीछे अलकायदा सरगना ओसामा बिन लादेन का हाथ है जिसे अमेरिकी सील कमांडोज ने 2 मई 2011 को पाकिस्तान के ऐवटाबाद में ओसामा बिन लादेन को मार गिराया। मीडिया का लाभ प्राप्त करके जार्ज डब्लू बुश ने इराक के राष्ट्रपति सद्दाम हुसैन की सत्ता को उखाड़ फेकने के लिए जन संहारक हथियार होने के आरोप के साथ 2003 में आक्रमण कर दिया और सद्दाम हुसैन को सत्ता से बाहर कर फांसी दे दिया गया।

सन् 1998 में भारत तथा पाकिस्तान के द्वारा परमाणु परीक्षण किया गया। विष्व मीडिया में भारत एवं पाकिस्तान दोनों देश खतरनाक स्थल के रूप में चिन्हित हुए। भारत के प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने विश्व जनमत को नकारते हुए भारत तथा पाकिस्तान को आर्थिक प्रतिबन्धों से मुक्ति हेतु 19 फरवरी 1999 को लाहौर (पाकिस्तान) बस यात्रा की तथा भारत एवं पाकिस्तान के बीच नये सम्बन्धों की षुरूआत हुई। किन्तु सन् 1999 में पाक घुसपैठियों द्वारा भारत के उत्तर में स्थित कारगिल क्षेत्र में कब्जा कर लिया गया। ये आतंकवादी/घुसपैठिये भारतीय वंकरो में सैम स्ट्रीजर मिसाइल से सज्जित होकर बैठ गये और भारत जब इन्हें 'आपरेशन विजय' के अन्तर्गत बाहर भगाने को कोशिश करने लगा तो दोनों पक्षों में घमासान युद्ध प्रारम्भ हो गया। इस युद्ध में मीडिया ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाया, जिसका परिणाम यह हुआ कि जैसे–जैसे भारतीय सैनिक शहीद होते गये, भारत ने एक नया जोश सेना में भर्ती होने तथा रक्तदान करनें वालो की लाइनें लग गयी। विवादास्पद बाफोर्स तोप ने अपनी उपयोगिता सिद्ध कर दी। मीडियाकर्मी सीमा पर जाकर हर एक घटना को कवरेज करते रहे, परिणाम स्वरूप भारत को विजय का उत्सव मनाने का अवसर प्राप्त हो गया।

26/11 की शाम को बम्बई में आतंकवादी हमला हो गया, जो आतंकवादी समुद्र के रास्ते पूरे साजो–सामान के साथ भारत आये थे। उन्होंने अपना निशाना लियोपोल्ड कैफे, कामा अस्पताल और जीटी अस्पताल, नरीमन हाऊस, छत्रपति शिवाजी टर्मिनल, ताज होटल तथा ओबराय ट्राइडेट को बनाया। पूरा मुम्बई स्तब्ध रहा। 60 घण्टों से भी अधिक समय तक होटल ताज तथा ओबराय ट्राइडेंट में आपरेशन चलता रहा। इन आतंकवादियों से भारत के मैरीन कमाण्डो फोर्स के जवान मार्कोस तथा एन0एस0जी0 के कमाण्डो ने मुकाबला किया। टीवी पर आंखे गड़ाये हर घटना का गवाह पूरा भारत बना रहा। मुम्बई हमले के कवरेज प्राप्त कर ताज होटल में कब्जा जमाये आतंकवादियों को भारतीय सेना की सटीक कार्यवाही का पता चलता रहा और टीवी देखकर मानीटरिंग कर रहे आतंकी सरगनाओं को निशाना साधनें में कोई दिक्कत नहीं हुई। इसी मीडिया की बेवकूफी ने अपने एक साथी अंग्रेजी पत्रकार को आतंकवादियों का निशाना बनवा दिया। वरिष्ठ पत्रकारों ने इलेक्ट्रानिक मीडिया की भूमिका की आलोचना करते हुए इसे तत्वहीन और अपरिपक्व करार दिया। वरिष्ठ पत्रकार मृणाल पाण्डेय के अनुसार किसी भी घटना को पेश करने में मीडिया को परिपक्व भूमिका निभाने की आवश्यकता है क्योंकि आप आदमी से इसका सरोकार होता है। आज भारत में नक्सल आन्दोलन भी जोर पकड़ चुका है। जिसका क्षेत्र विस्तार तिरूपति से पशुपतिनाथ तक माना जा रहा है। नक्सली समस्या देश के आन्तरिक सुरक्षा के लिए सबसे बड़ा खतरा बन चुका है यह लगभग देष के करीब 20 प्रान्तों के 223 जिलों में फैल चुका है। देश के प्रधानमंत्री नक्सलियों को आन्तरिक सुरक्षा के लिए खतरा बता रहें हैं। लोकतंत्र में चौथे स्तम्भ मीडिया को माना जाता है और इसकी बढ़ती ताकत से इन्कार नहीं किया जा सकता। मीडिया की इस ताकत को नक्सली एक हथियार के रूप में इस्तेमाल कर रहे है। मीडिया को हथियार के रूप में इस्तेमाल करने का तरीका इन लोगों ने सीमा पार से सीखा है। देश में घटने वाली आतंकी घटनाओं को मीडिया प्रमुखता से दिखाता एवं छापता है, और इससे कही न कही देश के

PIF/4.005 *ASVS Reg. No. AZM 561/2013-14*

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-11, No.-II, Issues-14 YEAR- Dec. -2019

दुश्मनों का मक्सद पूरा होता है। मैं मीडिया पर आरोप नहीं लगा रहा पर इस कड़वी सच्चाई को झुठलाया नहीं जा सकता। नक्सली अपने खौफ को लोगों के दिलों में बनाये रखने के लिए मीडिया का बखूबी इस्तेमाल कर रहे है। आज के आतंकवादी उच्च शिक्षा प्राप्त तथा अत्याधुनिक उपकरणों एवं प्रिन्ट मीडिया, इलेक्टानिक मीडिया एवं इन्टरनेट के माध्यम से अपने प्रचार–प्रसार को बढ़ावा दे रहे है यह एक प्रकार का मनोवैज्ञानिक युद्ध है। मनोवैज्ञानिक युद्ध से संबंधित प्रचार का सम्बन्ध शत्रु की विचार धारा को प्रभावित करना उसके मनोबल को ध्वस्त करना तथा अपने क्षेत्र में शत्रु को ऐसा करने से रोकना होता है। प्रचार को परिभाषित करते हुए ब्रिट महोदय ने कहा है कि प्रचार का अर्थ अन्य व्यक्तियों की मनोवृत्ति एवं मत को प्रभावित करने के लिए सत्य या झूठ का चयनात्मक उपयोग होता है। प्रचार हेतु संचार माध्यम जैसे पत्र, पत्रिकाएं, पंम्पलेट, पर्चे, ब्रोशर, रेडियों, मोबाइल, दूरदर्शन आदि माध्यम का व्यापक प्रयोग किया जाता है। प्रथम एवं द्वितीय विश्व युद्ध में संचार साधनों की प्रधानता देखी गयी। 1915 में ब्रिटेन की तरफ से ऐसी पर्चिया जर्मन सैनिको के क्षेत्रों में डाली गयी जिनसे उन सैनिकों के घरों में भुखमरी तथा अनेक समस्याओं का स्मरण होने से जर्मन सेना में निराशा फैल गयी। इसी तरह का प्रयोग द्वितीय विश्व युद्ध में भी किया गया। भारत आतंकवाद का शिकार होता रहा है। आतंकवाद की समस्या बहुत गम्भीर है। मीडिया में आतंकवादी हिंसा की बार–बार प्रस्तुति अन्ततः आतंकवादियों को मदद पहुँचाती है, क्योंकि आतंकवादी हिंसा यदि जनसंचार माध्यमों में व्यापक रूप से अभिव्यक्ति पाती है तो इससे शान्ति या जागरूकता कम, हिंसा और दहशत ज्यादा फैलती है। मार्ग्रेट थैचर ने कहा था कि “आतंकवाद से लड़ने में मीडिया की एक महत्वपूर्ण भूमिका है। यदि आतंकवादी किसी भी घटना को अंजाम देते है और मीडिया शान्त है तो आतंकवाद समाप्त हो जायेगा। आतंकवादी लोगों में दहशत करते है यदि मीडिया इसे नहीं लिखेगा तो किसी को पता नहीं चलेगा।”

समाज में कट्टरता एवं धार्मिक हठधर्मिता का प्रसार भी इसमें मुख्य भूमिका निभा रहा है। आतंकवाद को नियन्त्रित करने के लिए मीडिया एंव सरकार को मिलकर व्यापक नीति निर्माण करने की आवश्यकता है। इस प्रकार की नीतियों के निर्माण से मीडिया आतंकवादी गतिविधियों के नियन्त्रण हेतु सरकार के साथ सहयोगात्मक रवैया अपनाएगा साथ ही सरकार द्वारा कट्टरता को बढ़ावा देने वाली सामग्रियों को नियन्त्रित किया जाना आवश्यक है, मीडिया अगर सकारात्मक भूमिका निभाये तो राष्ट्र से सभी अवैध धन्धे, भ्रष्टाचार, कालाबाजारी, मादक द्रव्यों की तस्करी आदि बन्द हो जायेगें, किन्तु लोकतंत्र को मजबूत तथा कमजोर करने में मीडिया सृजनात्मक एंव विध्वंसात्मक दोनों रूप अपना सकती है। मीडिया के लिए राष्ट्र की सुरक्षा, एकता और देश में सामाजिक सांस्कृतिक सौहार्द का भाव बनाए रखने से बड़ा कोई दूसरा लक्ष्य नहीं है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. गौड़, वीरेन्द्र कुमार– विश्व में आतंकवाद–2006–पृष्ठ–13
2. चन्द्र, डा0 गुलाब, ललित द्वारा संकलित सुरक्षा परिदृश्य में डा0 अभय कुमार श्रीवास्तव का लेख 'राष्ट्रीय हित और सैन्य पत्रकारिता', पृष्ठ–59
3. जागरण वार्षिकी– 2002–विश्वव्यापी आतंकवाद–पृष्ठ–14
4. असलम, उजमा– मीडिया युद्ध–दैनिक जागरण साप्ताहिक परिशिष्ट– 4 नवम्बर, 2001, पृष्ठ–1
5. उपरोक्त
6. मिश्र, दीनानाथ– अमेरिकी प्रचार तंत्र का चमत्कार, दैनिक जागरण 11–1–2002, पृष्ठ–10
7. सहगल, मेजर जनरल विनोद–अन्तर्राष्ट्रीय आतंकवाद, सं0–2009 पृष्ठ–200
8. पचौरी, सुधीर– मीडिया जनतंत्र और आतंकवाद, प्रथम संस्करण–2003, प्रथम आवृत्ति–2005, पृश्ठ–14
9. तोराव, अबू– मीडिया को हथियार बनाते नक्सली, मीडिया विमर्श, अप्रैल–जून 2010, पृष्ठ–69
10. गुप्त, परशुराम : सैन्य मनोविज्ञान : द्वितीय संस्करण–2000 पृष्ठ–107

*****